शब्द जे जीबैत रहत

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-49867-11-6

शब्द जे जीबैत रहत
(मैथिली कविता-संग्रह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2026
मूल्य : 250/-

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-5
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार-847211
पटना : 63, एम.आई.जी., हनुमान नगर, पिन-800020
दिल्ली एनसीआर : प्लॉट एच. एस.-2, ब्लॉक एफ
सेक्टर-अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा-201308
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Shabd Je Jibait Rahat
A Collection Of Maithili Poems By **Kamini**
First Edition : 2026, Price : 250/-

ई पोथी हम
मातृतुल्य सिनेह देबयवाली अपन सासु
आ
पिता तुल्य सिनेह देबयवला अपन ससुर जीकेँ
समर्पित करैत छियनि।

—कामिनी

अपन बात

ई बात हमरा हरदम मोन रहैत अछि जे एकटा निश्चित अवधिक लेल ई जीवन प्राप्त भेल अछि। जे करबाक अछि से एहिये अवधिक भीतर आ ई समय-सीमा कहिया समाप्त भऽ जायत सेहो किछु निश्चित नहि पता हमरा। कखन कोन मोड़ पर समय संग छोड़ि देत, कोन काज पूरा भेल, कोन अधूरा अछि, तकर लेखा-जोखा करबाक लेल समय-समय नहि देत। यैह जीवनक परम सत् छी, जकरा नकारल नहि जा सकैए, जकरासँ भागल नहि जा सकैए, जकर मात्र सामना कएल जा सकैए। इच्छे की, अनिच्छे मात्र स्वीकारल जा सकैए। जँ जीवन अछि तऽ मृत्यु सेहो रहबे करत। पृथ्वीक निरंतरता बनल रहय ताहि लेल ई जीवन-चक्र आवश्यक। पुरान पात खसैए तऽ पतझड़ कहबैए। फेर कनिये दिन बाद ओही डारि पर नव-नव पल्लव लगैए, विकासक क्रममे पात बनैए तऽ वसंत अबैए। ई पुरान पातक खसब, ई नव पातक आगमन, मौसम-चक्रकेँ संतुलित कयने रहैए। जँ पुरान पात डारिसँ अलग नहि हैत तऽ ओहि डारि पर नव पात कोना आओत, नव फूल कोना फुलाओत! प्रकृति कोना अभिसार करतीह! जँ परिवर्तन नहि हो प्रकृतिमे तऽ निरसता आबि जायत। जीवन-चक्र सुचारू रूपसँ नहि चलत। तेँ जन्म-मृत्युक शाश्वत सत्यक चक्रमे मनुखसँ प्रकृति तककेँ भगवान बान्हिकऽ पठेलखिन अछि।

एहि सभ सोचक बीच जखन कखनो अपन बीतल समयक मूल्यांकन करय बैसैत छी तऽ मन उदास होमय लगैत अछि। लगैए हाथ खालीक खाली अछि। जे किछु समेटबाक प्रयास कयलहुँ आइ धरि से बालु जकाँ मुट्ठीसँ ससरि गेल। उड़ि गेल हवाक संग दूर कतहु! आब हम लाख प्रयास करब, ओ हमरा हाथ नहि आओत दुबारा। एहन स्थितिमे मन युद्धमे हारल योद्धा जकाँ हुअ लगैत अछि। जमा होमय लगैत अछि हृदयमे दुःखक पहाड़, जकर बोझ उठबैत-उठबैत मोन थाकय लगैत अछि। वास्तवमे जखन उपलब्धिकेँ गानय बैसैत छी तऽ लगैए, एतेक टाक जीवनमे की कयलहुँ तऽ किछु नहि। माय कहैत छलीह एकटा फकरा— ‘दिन गयो मिथ्या काजे

रात गयो निंद रे' से राति-दिनक बीच जे समय बीतैत अछि, ओहि बीच हम की करैत छी तऽ किछु नहि। सभटा डे-टू-डेक दैनिके काज। कोनो एहन काज नहि जकरा उपलब्धिमे गानल जा सकय। हितोपदेशमे पढ़ने रही— आहार निद्रा भय मैथुनश्च, समान मेतत् पशुमिः समाना, अर्थात— आहार (भोजन) निद्रा (नींद) भय-मैथुनश्च (काम-क्रिया) मनुखे सन पशुओ करैत अछि। जँ एहिसँ अलग अहाँ नहि कयलहुँ खास तऽ फेर अहाँमे आ पशुमे कोन अन्तर?

से मनुख बनबाक लेल जे खास अलग सोचलहुँ से तऽ हम नहि कऽ सकलहुँ। ओना सत् कही तऽ सांसारिक क्रिया-कलाप आ उपार्जनक मादे हमर सोच सभ दिन आलसेपूर्ण रहल। कतेक लोक सांसारिक सुख आ सम्पत्ति लेल उपार्जन करैत अछि। दिन-राति लागल रहैत अछि। हम एहि मामिलामे एकदम अनाड़ी रहलहुँ। भेल तऽ भेल, नहि भेल तऽ धनि सन! ओना आलसी लोक भाग्यवादी सेहो होइत अछि— 'भगवान! भाग्यमे लिखनहियें नहि छलखिन तऽ हम की करबै।' एहने सन सोचक बीच सभटा समय पाछुक गमा देलहुँ। खैर, कोनो बात नहि। बीति ताहि बिसारिये। ओना सांसारिक सुखक प्रति कोनो लालसो नहि अछि तेहन। पिता गीता पाठ करैत छलाह नित दिन। अगल-बगलमे बैसल-बैसल गीताक किछु पाँतीक श्रवण हमहुँ कइये लैत छलहुँ। यैह कारण रहल जे गीताक प्रति हमरा हृदयमे विशेष जगह अछि आइयो— कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्। गीताक ई बीज मंत्र सदैव प्रेरणास्रोत रहल। कर्म रूपमे हमरा पारिवारिक जिम्मेवारीसँ अलग जे किछु देखायल, ओ किताब, कॉपी आ कलम। एहिसँ बेसी नहि हम देखय चाहलहुँ आ नहि हमरा देखायल। किछु जे समय परिवर्तनक कारणें देखबो कयलहुँ ओ इन्द्रधनुष सन छल, एम्हर उगल, ओम्हर डूमल।

हमरा हाथमे आइ कलम-कॉपी अछि। काल्हियो हमरा हाथमे कलमे-कॉपी रहत। एहिसँ बेसी हम नहि काल्हि चाहलहुँ, नहि आइ चाहैत छी। हम की लिखैत छी, हमर कविताक की गुण-अवगुण रहैए ताहि विषय पर हम नहि जायब। एकर मूल्यांकन समय करत। समयक नजरिसँ किछु नहि चूकैत अछि। ओ सभक लेखा-जोखा रखैत अछि। हमरो राखत। हम लिखैत छी, आगुओ लिखबाक प्रयास करब, हमर चिंतन ओतय रहत। हम

एखन– सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज'' संग एकाकार भऽ कविताक हाथ थम्हने आगू बढ़ि रहल छी। भविष्यक गर्भमे की छूपल अछि, हमरा नहि पता।

पाछूक अन्य पोथी जकाँ एहियो पोथीकेँ पाठकक प्रेम प्राप्त होयत से हम जनैत छी। तहन पाठकक अभाव हर भाषा, हर साहित्यमे भऽ रहल अछि से चिंताक बात तऽ अछि अवश्य मुदा पढ़त साहित्य तऽ वैह जकरा साहित्यसँ लगाव रहतै! साहित्य भात आ रोटी नहि छी जे कियो खा लेत। कहुना पचा लेत। साहित्य पढ़बा आ गुणवाक लेल एकटा विशेष भाव-भूमिक होयब हृदयमे आवश्यक अछि। बिना संवेदनाकेँ साहित्य नीमक पात सन अक्कत तीत लागत, जकरा नहि ओ खा सकत आ नहि पचा सकत। ओ साहित्यकेँ निंघेस बनाकऽ फेकि देत। मुदा पाठकविहीन नहि अछि कोनो भाषा-साहित्य। कम-बेस सभ साहित्य, सभ भाषाक पाठक अछिये आ गुणग्राही सेहो। ओहने गुणग्राही पाठक लेल कोनो लेखक लिखैत अछि, से हमहुँ लिखलहुँ अछि। विश्वास अछि पाठकक हृदयमे ई– 'शब्द जे जीबैत रहत', अपन स्थान बनेबामे सफल होयत। विशेष आर हम की कहब, पाठक कहता, हम कतेक अंकसँ पास भेलहुँ अछि अपन एहि दशम पोथीक लिखित सामग्रीमे...।

–कामिनी

काव्य-क्रम

11 : शब्द जे जीबैत रहत
13 : शब्द जे सहारा बनैत अछि
14 : शब्द जे अर्थहीन होइत अछि
15 : सामर्थ्यवान शब्द
17 : निर्वस्त्र शब्द
19 : उजरा पड़बा
21 : पिंजड़ामे बंद सुग्गाक व्यथा
24 : कविता
26 : निर्माल
28 : नदी जे पवित्र छथि
30 : नदी जे मैल छथि
32 : नदी जे बहैत छलीह हमरा गाम दने
35 : नदी जे उत्फाल छलीह
38 : पहिल अछारक मिलन माटिसँ
41 : अपना घरक सुख
43 : लाइव वीडियो
45 : गामक भोज
48 : परित्राणाय साधूनाम्
50 : समय-समयक बात छी
53 : ताड़क गाछ
56 : सोंगर
58 : पिंडदान
60 : शराब आ सवाल
63 : सवर्ण बनाम सवर्ण
65 : उकटा-पैंची
68 : एकटा अहिंसक व्यक्तिकेँ हिंसक बनाओल जा सकैए

70 : टीआरपी
72 : यतो धर्मः ततो जयः
74 : कामना रहित मोन
76 : नामसँ प्रेम
79 : मूल्यांकन
81 : राजाजी
84 : रोते हैं सब पंख पखेरू, साथ तेरे जो खेले
87 : गामसँ घर अयलहुँ
88 : कुछ पाकर खोना है, कुछ खोकर पाना है
90 : दो पाहन के बीच में
91 : धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
93 : मुँहमे अँगुरी दऽ कऽ बजायब
95 : फूलसँ चोट
96 : कुपोषण
98 : कोन घर कानन, कोन घर गीत
100 : बेटा-बेटा, हाय रे बेटा
103 : बारह बजे रातिक कवि सम्मेलनमे
105 : आउ, विवाद नहि संवाद करी हम
107 : अपन-अपन धर्म
109 : अनुबंध
111 : जन्मजात सम्बन्ध
113 : गाम-1
115 : गाम-2
117 : मेरे राम
119 : खंडहर
121 : सभ सम्बन्धक बीचमे अछि मोबाइल
124 : हेहर
127 : श्मशान वैराग्य

शब्द जे जीबैत रहत

कवि मरि गेलाह
कवि मरि जेताह
कवि मरबेक लेल
जीबैत छथि
मृत्यु शाश्वत छी
जकरा कवि
टालि नहि सकैत छथि
प्रायः सभकेँ मरबाक छै
की कवि
की अन्य लोक

धरि कवि छोड़ि जेताह
अपना पाछू
अपन शब्द-लोक
जे जीबैत रहत
वंश-वृक्ष बनल
कविकेँ
निरवंश होयबासँ
बचेबाक लेल

कवि मरताह तऽ
नहि रहतनि चिंता
एहि बातक
की हमर पाछू
हमरा के मोन राखत
हमर तर्पण के करत

हमर नाम
के आगू बढ़ाओत

कवि जे शब्द-लोकक
निर्माण करताह
कवि जे शब्दक
वृक्ष लगौताह
कवि जाहि शब्दक साधनामे
जीवन बितौताह
से शब्द
जीबैत रहत
कल्प-कल्प धरि
जामे तक बाँचल रहत मनुख
जामे तक बाँचल रहत ई सृष्टि
जामे तक बाँचल रहत
एतहुका सुव्यवस्था
सभ्यता-संस्कृति
शब्द नहि मरैत अछि सहजहि
शब्द अमर अछि
लोक भलेहि
हो नाशवान!

शब्द जे सहारा बनैत अछि

राति अमावसक हो
वा पूर्णिमाक
बाट कंटकपूर्ण हो
वा फूल भरल
संगमे दस-पाँच साथी हो
वा असगर रही
जँ शब्द नहि अछि
अहाँ लग
तऽ अहाँसँ पैघ दरिद्र
अहाँसँ पैघ लाचार
अहाँसँ पैघ दुःखी
अहाँसँ बेसी असगर
कियो आन नहि

शब्द जीबाक साधन छी
शब्द अमावसक पूर्णिमा छी
शब्द असगरक साथी छी
शब्द कंटकपूर्ण बाटकेँ
फूलसँ भरैत अछि
शब्द व्यक्तिकेँ
समूहसँ जोड़ैत अछि
शब्द सभ अभावकेँ
भावसँ भरैत अछि
शब्द जे सहारा बनैत अछि
विपरीत देश-काल आ पात्रक बीच।

शब्द जे अर्थहीन होइत अछि

दुनियाँमे
दू प्रकारक शब्द होइत अछि
सार्थक आ निरर्थक
सार्थक शब्द
अपन गरिमा बनेने रहैए
विपरीत देश-काल
आ पात्रक बीच रहितहु
जे वर्तमानसँ
भविष्य धरिक
यात्रा तय करैत अछि
आ जकर नाम
इतिहासमे दर्ज होइत अछि
स्वर्णिम अक्षरमे

निरर्थक शब्द
अपन उपस्थिति तऽ
दर्ज करबैत अछि
धरि ओ गरिमाहीन होइत अछि
जकर नहि वर्तमान होइत अछि
आ नहि भविष्य
इतिहास बनैत अछि जरूर
जकर स्मरण लोक करैत अछि
घृणाक दृष्टिएँ
जे वातावरणकेँ प्रदूषित करैत अछि
आ यात्राकेँ आरो दुरुह!

सामर्थ्यवान शब्द

कोन शब्द
कतेक दूर धरिक
यात्रा करत
आ केहन प्रभावशाली हैत
जनसमूहक बीच
अपन उपस्थिति
कोन रूपमे दर्ज करत
जकर इतिहास लिखल जेतै
स्वर्णिम अक्षरमे
आ जकर वर्तमान
देदीप्यमान हैत
सहस्त्रो सहस्त्र सूर्यसँ
ई तय करैत अछि
सामर्थ्यवान शब्द

शब्दक सामर्थ्य
अपन भविष्य आ वर्तमान
गढ़ैत अछि
अपना लेल
अपन रास्ता बनबैत अछि
ओ निर्धारित करैत अछि
अपन महत्ता
ओ प्रतिष्ठित करैत अछि
अपनाकेँ
विशेष रूपमे

ओ अमावस्याक अन्हरियामे
पूर्णिमाक चान सन
पसरि जाइत अछि
गगन मण्डलमे

सामर्थ्यवान शब्द
व्यक्तिक शक्ति होइत अछि
जे ओकरा लड़बाक
साहस दैत अछि
अन्याय अत्याचारक विरुद्ध
आ हर हालमे
ओकर संग दैत अछि
कोनो विश्वासी मित्र जकाँ
चक्रव्यूह कतबो घनगर हो
ओ ओकरा ल' अनैत अछि
हाथ पकड़िकेँ बाहर
सामर्थ्यवान शब्द
संग नहि छोड़ैत अछि
परिस्थिति केहनो विपरीत हो।

निर्वस्त्र शब्द

निर्वस्त्र स्त्री आ पुरुषे
नहि होइत अछि
शब्द सेहो होइत अछि निर्वस्त्र
आ जखन शब्द
निर्वस्त्र होइत अछि
त' संसारक सभ प्राणी
भ' जाइत अछि निर्वस्त्र
सवस्त्र रहलाक बादो

एकटा निर्वस्त्र शब्द
जीवनक सभ मर्यादा
तार-तार क' दैत अछि
जतय सभ्यता-संस्कृति
अपन मुँह छुपेबाक लेल
तकैए कोनो एहन जगह
जतय बँचा सकय ओ
अपन अस्तित्व
अपन गरिमा

निर्वस्त्र शब्दक निर्माण
आ प्रयोग
जखन करैए
सभ्य समाजक लोक
त' सामाजिक संतुलन
एकाएक डगमगा उठैए
आ ठाढ़ भ' जाइत अछि

सभ सभ्य लोकक समक्ष
एकटा अनुत्तरित प्रश्न
जकर उत्तर ताकब
कठिने नहि
बहुत कठिन होइत अछि।

उजरा पड़बा

करीब आठ बजे
भोरुका बात छी
जखन भानस करैत रही
भनसा घरमे
तँ देखलहुँ
कतहुसँ आबिकऽ
एकटा उजरा पड़बा
भनसाघरक खिड़की पर
बैसि गेल
आ टुकुर-टुकुर ताकय लागल
हमरा दिस
वर्णन नहि कऽ सकैत छी
जे हमरा कतेक खुशी भेल
कतेक सुख प्राप्त भेल
लागल ओहि एक नजरिमे
सम्पूर्ण सृष्टिक प्रेम
समाहित अछि

युद्धक भयावहताक
एहि युगमे
जतय मानव आ मानवता
कराहि रहल अछि
प्रकृतिक सुन्दरता
विनष्ट भऽ रहल अछि
मनुखक युग-युगक खोज
सभ्यता-संस्कृति

ओतय एहि उजरा पड़बाक आगमन
एकर निश्छल आँखिक प्रेम
एकटा नव उम्मीद
नव प्रभातक
अवश्य सनेश
दऽ रहल छल

हम पूर्ण आश्वस्त तँ
नहि छी जे विश्व
एहि युद्धक आगिक लपेटसँ
अचानक बाहर आबि जायत
आ सभ किछु भऽ जायत
पहिने जकाँ
शांत, सुखी आ समृद्ध
धरि आशावान छी अवश्य
की एक न एक दिन लोक
लड़ैत-लड़ैत
अचानकसँ बंद कऽ देत युद्ध
आ श्रद्धावनत भऽ
त्यागि देत
हाथक शस्त्र
आ अहिंसक भऽ कहत
अशोक जकाँ
बुद्धं शरणम् गच्छामि
धर्मम शरणम् गच्छामि!

पिंजड़ामे बंद सुग्गाक व्यथा

छठिक घाट पर छी ठाढ़
आ ई घाट बनल अछि
छत पर
बेस नम्हर-चौरगर
अपार्टमेन्टक ऊपर
फूल-पानसँ सजल
लाइट-मरकड़ी लागल
चकमक-चकमक करैत

सूर्योपासनामे लीन
व्रती संग
हमहुँ छी सूर्य आराधनामे ठाढ़
प्रार्थना करैत
यथा-शक्ति
तथा-भक्ति
—'करिये क्षमा छठि मैया
भूल-चूक गलती हमार'
शारदा दीक गीतक संगे

ओतहि बगलमे
राखल अछि
एकटा बेस नम्हर पिंजड़ा
जाहिमे बचहौने सन
एकटा सुग्गा
बंद अछि
सुग्गा छटपट, कछमछ

करैत अछि
ओहि दू बीतक
पिंजड़ाक भीतर
आ उड़ैक असफल प्रयासमे
पिंजड़ासँ टकरा जाइत छै
ओकर पाँखि
सामनेमे सम्पूर्ण आकाश छै
जतय सूर्यदेवक लालिमा
पसरि रहल अछि
धीरे-धीरे

मोन करैए
ओहि पिंजड़ाक मुँह खोलि दी
आ मुक्त कऽ दी ओकरा
एहि बंधनसँ
धरि हम एना नहि कऽ पबैत छी
ओहि सुग्गाक मालिक
करे-कमान अछि चारूकात
हम दाँतक बीचसँ
जीहकेँ कोना मुक्त करी
धरि अपन प्रार्थनामे
शामिल कऽ लेने छी
सुग्गोकेँ
—'हे छैठ परमेश्वरी
कोढ़िया के काया दीह'
बाँझिन के पूत
जखन सभक
सभ मनोरथ
अहाँ पूर्ण करितहि छी
तऽ एकटा ईहो सुनू

एहि अबोधक व्यथा
आ कऽ दियौ एकरा
पिंजड़ामुक्त
जे पाँखि रहितहुँ
उड़ि नहि पबैए
भीतरे-भीतर
कूही भऽ-भऽ कनैए!'

कविता

कखनो भाव
तऽ कखनो अभाव
होइत अछि कविता

कखनो सवाल
तऽ कखनो जवाब
होइत अछि कविता

कखनो प्रेम
तऽ कखनो घृणा
होइत अछि कविता

कखनो मिलन
तऽ कखनो बिछुड़न
होइत अछि कविता

कखनो आन
तऽ कखनो अपन
होइत अछि कविता

कखनो चैन
तऽ कखनो बेचैन
होइत अछि कविता

कखनो वैराग्य
तऽ कखनो संसार

होइत अछि कविता

कखनो समस्या
तऽ कखनो समाधान
होइत अछि कविता

कखनो सर्वस्व
तऽ कखनो हाथक मैल
होइत अछि कविता

कखनो बंधन
तऽ कखनो मुक्ति
होइत अछि कविता

कखनो जीव
तऽ कखनो ब्रह्म
होइत अछि कविता

कखनो सोइरी
तऽ कखनो श्मशान
होइत अछि कविता

कखनो जेठक दुपहरिया
तऽ कखनो साओनक साँझ
होइत अछि कविता

कखनो अमावश्याक अन्हरिया
तऽ कखनो पूर्णिमाक चान
होइत अछि कविता।

निर्माल

फूल चाहे
गुलाबक हो
या कमलक
चारूकात सुवासित करयवला
पारिजाते कियैक ने हो
देव-पित्तर पर
चढ़लाक बाद
किछु समय
बितलाक बाद
ओहो भऽ जाइये निर्माल
जकर नहि
महत्त्व होइत अछि
नहि पूछ
लोक जेना-तेना
देव-पित्तरक शीश परसँ
ओकरा उतारि
कात फेकय चाहैत अछि

यैह हाल होइत अछि
मूल्यवानसँ मूल्यवान वस्तुक
ओहिमे लोको अबैत अछि
जे आइ होइत अछि महत्त्वपूर्ण
ओ काल्हि भऽ जाइत अछि
एकदम अदना महत्त्वहीन
जकरा आइ पूजैत अछि लोक
ओ काल्हि निर्माल बनि

उपेक्षित-अनादरित होइत अछि
महत्त्वपूर्णसँ महत्त्वपूर्ण जगहमे
पैघसँ पैघ लोकक हाथेँ
आ चाहियोकेँ
अपना लेल ओ जगह
नहि सुरक्षित राखि पबैत अछि
जे ओकरा लेल
हो उपयुक्त

जीवनमे नित्य
किछु नहि अछि
समय-चक्र बदलैत रहैए
एम्हरसँ ओम्हर
आ लोक
समयक हाथक
मुरुत बनल
सभ किछु सहबाक
सभ किछु देखबाक लेल
विवश रहैए

अपना हाथमे
किछु नहि अछि
नहि वर्तमान
नहि भविष्य
भूत तऽ
बीतल समयक नाम छी
जे तीत मीठ
अनुभव दऽकेँ
बीति गेल
कहिया ने!

नदी जे पवित्र छथि

ओना अहाँ नापब तऽ
पवित्रताक कोनो पैमाना
नहि अछि
मीटर-सेंटिमीटरमे
नहि नापल जा सकैए पवित्रता
पवित्रता अन्तर्मनक चीज छी
जकरा अन्तर्मनेसँ
नापल जा सकैए
धरि लौकिक भाषामे
पवित्रतोक पैमाना
लोक तय करैत अछि
आ एहि पवित्रताक पैमानामे
गंगा सएमे सए अंकसँ
उत्तीर्ण होइत छथि

गंगा जकर नाम मात्रक
उच्चारणसँ
रोइयाँ-रोइयाँसँ
एकटा अपूर्व पवित्रताक
एहसास जगैए
—'गंगा पाप धोरनी गंगा'
जन-जनक कंठमे
बसल ई पाँती
हजार-लाख वर्षसँ
ऊपरसँ
लोकक हृदयमे

अपन स्थान
बनेने अछि
—'नव उज्ज्वल धार हार हीरक सी सोहति
बीच-बीच छहरति बूँद मध्य मुक्तामणि पोहति'
एहने सन पवित्रताक बीच
मनमे आयल हेतनि
कविकेँ ई पाँती

गंगा जे पवित्र छथि
गंगा जे पूजित छथि
गंगा जे घर-घरमे
संरक्षित छथि
गंगा जे जिनका बिना
नहि होइत अछि
एहि देशक
कोनो नीक-बेजाय कर्म
गंगा जे जीवनसँ
मृत्यु धरिक
सुख-दुःखक सहभागी छथि
गंगा जे एक बूँद
स्पर्श मात्रसँ
पवित्र करैक क्षमता
रखैत छथि
गंगा जे एहि देशक
आत्मा छथि
गंगा जे पापियोकेँ मुक्ति
देबाक अधिकारिणी छथि।

नदी जे मैल छथि

गौरवशाली इतिहासवाली यमुना
आइ वर्तमानमे
मैल छथि
मैल छनि
हुनक परिवेश
आ एतेक दुर्गंध
पसरल अछि
हुनक चारूकात
जे लोक आचमनि
की करत
दर्शनोसँ
घबड़ाइत अछि

जे यमुना कहियो
पियास मेटबैत छलीह
नगरवासी लोकक
से नगरवासी आइ
यमुनाकेँ
विपन्नावस्थामे आनि
अपनाकेँ गौरवान्वित
अनुभव करैत अछि
भला युग संसार नहि अछि
से पहिने सुनैत छलहुँ
आइ यमुना
भोगि रहल छथि
ई यथार्थ

इतिहासपुरुष श्रीकृष्ण
जाहि यमुनाक तट पर
प्रेमक पहिल बिगुल बजेलाह
इतिहासप्रसिद्ध स्त्री श्रीराधा
जाहि स्वरकेँ आत्मसात कयलनि
जाहि यमुनाक तट पर
सहस्रो-सहस्र गोप-गोपी
राधा-कृष्णमय भऽ
रास रचेलक
अमूर्त प्रेमकेँ
मूर्त रूप देलक
से यमुना आइ
देशक अन्य
सामान्यो नदीसँ निम्न
अधमगतिकेँ
प्राप्त छथि
आ मुक्तिक आशमे
ताकि रहल छथि
ओहने कोनो
इतिहास पुरुषक बाट
जे कालियाक विषसँ
सविष भेल
यमुनाक उद्धार करत
वर्तमानकेँ पुनर्जीवित कऽ
गौरवशाली बनाओत!

नदी जे बहैत छलीह हमरा गाम दने

हमरा गामसँ
कोसी बहुत दूर छलीह
बागमती-गंडक सेहो
गंगाक बाते की कहब
ओ तऽ सहजहि दूर
एतेक दूर की
सौभाग्येसँ गंगा स्नानक
सौभाग्य भेटैत छल
ओहो लाख ब्योंत
कयलाक बाद

तहन बात रहल नदीक
तऽ एकेटा नदी बहैत छलीह
हमरा गाम दने– कमला
ओहो गामक अंतिम सीमा पर
कलकल-छलछल कमला
जे सम्पूर्ण ग्रामीण लेल
गंगा सन महिमामयी छलीह
कहलो गेल अछि–
‘भूखले की मीठ तऽ गुल्लड़ि’

ओना कमला
गुल्लड़ि नहि छलीह
हमरा गामक
कमला तऽ कमल छलीह
जे कोसी सन उत्फाल

कोनो हालमे
नहि होइत छलीह
संयमित-मर्यादित
रहैत छलीह अक्सरहाँ
ओना छलीह तऽ ओ नदीये
आ नदीमे आवेग अयनाइ
कोनो दुर्गुण नहि
ई तऽ ओकर गुणधर्म छी
जखन कोनो
पर्व-त्योहार आबय
आ गंगा स्नानक महत्ता
उल्लेख होमय लागय
तऽ लोक कपड़ा लत्ता लऽ
बिदा भऽ जाइ
कमला स्नान लेल
खास कऽकेँ स्त्रीगण
कमला मात्र नदी नहि
हमरा गामक
गंगो छलीह
यमुनो आ त्रिवेणियो

से कमला एक बेर
कोशीक दबावे
एना ने मजबूर भेलीह
की बान्ह तोड़िकऽ
आबि गेलीह गाम पर
आ पानि-पानि भऽ गेल
लोकक घर-अँगना
बाध-बोन
कताक घर खसल

कताक लोक बहल
कताक माल-जाल मारल गेल
तकर कोनो गनती
नहि रहल
आ छह मास धरि
ओ गाममे निर्बाध
विचरण करैत रहलीह

राति जखन गहराइ
तऽ कमलाक हहायब
दूरेसँ सुनाय पड़य कानमे
आ शांतो मनमे
उठय लागय
सुनामीक कम्पन
आ ई कम्पन
ताम धरि बनल रहल
जामे धरि कमला
नहि समेटल गेलीह
दूभि-धान दऽ
खोइँछमे
नहि बिदा कयल गेलीह
शुभ-शुभकेँ
बान्हक ओहि पार!

नदी जे उत्फाल छलीह

बच्चा रही तऽ
जाइ मैंआ-माय संगे
सिंहेश्वर स्थान
ताहि दिनमे
सिंहेश्वर स्थान जयबाक
बहुत चलनसारि रहय
हमरा गामक लोक
हेंजक हेंज जाइ
सिंहेश्वर स्थान
माथ पर बन्हने
खेबा-खर्चा
आ दू दिने
तीन दिने पहुँचय
सिंहेश्वर बाबाक स्थान

ओहि दिनमे
आइ-काल्हि जकाँ
अयबा-जयबाक
सुलभ साधन
नहि रहय
लोक पैरे करय यात्रा
दूर-दूर धरि
बस-गाड़ीक सुविधा
नामेमात्र कतहु-कतहु
सुदूर ग्रामीण एरियामे
तऽ आरो नहि

तेँ लोक नापि लिय
कोशक कोश जमीन पैरे
आ भऽ आबय
सिंहेश्वर-कुशेश्वर-विदेश्वर स्थान

से सिंहेश्वर बाबाक बाटमे
दूटा नदी बहैत छलीह
एकटा कमला
एकटा कोसी
कमला धीर-गंभीर
कोसी उत्फाल
पानि कम
आवेग बेसी
एहन आवेग
जे लोक पैर रखैत छल
आ कोसी पैर तरहक माटि लऽ
पड़ा जाइत छलीह
गोल-गोल बनैत
पानिक बीचमे भमरा
देखितहिं लोक
डरा जाइत छल
—'हे मैया कोसी
रक्षा करिह'
चचरी पुल
जखन लोक
करैत छल पार
तऽ डरे देह
डगमगाय लगैत छलै
किछु धारमे तऽ
नाव रहैत छल

मुदा किछु धार लोक
पैरे पार करैत छल

गाहे-बगाहे
अबितहि रहैत छल
कोसीमे बाढ़ि
आ सभ किछु समेटिकऽ
लऽ जाइत छलीह कोसी
अपना संगे
कोसीक पेटमे बसल
गामक लोक
छह मास बान्हे पर
या मचाने पर
बितबैत छल
जतय देखू ततय
पानिये-पानि
अवग्रहमे पड़ि जाइत छलै
लोकक प्राण
खेत-पथार
सभटा कोसीयेक पेटमे
की खैत, की बचैत
उत्फाल भेल
नदीक समक्ष
लोकक जीवन
ओकर सुख-दुःख
बिन पतवारक नाव सन
हर समय डगमगाइते रहैत छल!

पहिल अछारक मिलन माटिसँ

धरती फागुने-चैतसँ
तपय लगैत अछि
सूर्य अपन
प्रखर तेज लेने
अहल भोरे
उदित होमय लगैत अछि
आ विचरण करय लगैत अछि
सम्पूर्ण आकाशमे

पाँच बजे भोरे
जे उगैत अछि सूर्य
से छह बजे साँझ धरि
करे-कमान रहैत अछि
लोकक माथ पर
लाह-वाह
होइत रहैत अछि लोक
प्रकृतिक सभ जीव-जंतु
आतप तेजसँ
आकुल-व्याकुल

ई तपन
आरो बढ़ि जाइत अछि
जखन बैशाख-जेठ तपैए
धरतीसँ आगि उठैए
चर-चाँचर
इनार-पोखरि

सभ सुखाय लगैए
प्रकृति करय लगैए
अग्नि-वृष्टि

जखन चर-अचर
सभ जीव जंतु
एक-एक बूंद पानि लेल
तड़पय लगैए
तरसय लगैए
तखन अबैए अषाढ़
बरखाक मास
आ एकटा उम्मीदक बूँद
खसैय धरती पर
टपसँ

ओहि पहिल अछारक
मिलन माटिसँ
अपन उपस्थिति
एकटा तेज गंधक संग
दर्ज करैए
धरतीक सभ प्राणीक
साँसमे
जकरामे एकहुरत्ती
गंधक स्पर्श
करबाक क्षमता
बाँचल रहैए शेष

दुनियाँक सभ स्पर्शसँ कोमल
सभ सुवाससँ तेज
होइत अछि

पानि आ माटिक
पहिल मिलनक सुवास
ओ सोन्हगर सुगंध
जे अपन उपस्थिति
हर साँसमे
शामिल करैत अछि
भलेहि अहाँ
लग रही वा दूर!

अपना घरक सुख

अपन घरक छाहरि
जँ माथ पर फूसोक रहैत अछि
तैयो शीतल लगैत अछि
बड़ सहारा बुझना जाइत अछि

अपना घरक चिनबार पर
जँ छुच्छो रोटी बनैत अछि
तऽ बड़ स्वादिष्ट लगैत अछि
खाकऽ तृप्ति बुझाइत अछि

अपना घरक घैलची पर
जँ माटियोक घैलमे
पानि भराइत अछि
तऽ आरोसँ अपूर्व लगैत अछि
अन्दर तक पियास बुझबैत अछि

अपन घरक असघनी पर
जँ गुदरीयो पुरान टँगाइत अछि
तऽ अलगे आनन्द अबैत अछि
आत्मविश्वास जगबैत अछि

अपन घरक कोठी-भरलीमे
जँ मरुओ-मोसरी रहैत अछि
तऽ मोन निश्चिंत बुझाइत अछि
रातिकेँ नींद अबैत अछि

अपन घरक चौकी पर
जँ नारो-पुआर ओछायल रहैत अछि
तऽ चैनक नींद अबैत अछि
सुखक सपना जगबैत अछि

अपन घरक खाम्ह
जँ टेढ़ो-मेढ़ो रहैत अछि
तऽ घरक सभटा भार-कुभार
उठबैत अछि
सहारा बनैत अछि।

लाइव वीडियो

एक तरफ
जरि रहल छल घर
दोसर तरफ
बनि रहल छल
लाइव वीडियो
संगहि अनुरोध
सेहो भऽ रहल छल
जे जल्दी-जल्दी एकरा
लाइक आ शेयर कऽ दियौ
जाहिसँ बेसीसँ बेसी लोक
एकरा देखि सकै

सत् कहैत छी
जते दुःख हमरा
घर जरैत देखिकऽ
नहि भेल
ओहिसँ बेसी दुःख हमरा
ओहि लाइव वीडियो
देखिकऽ भेल
कहू, आगि लागब तऽ
एकटा प्राकृतिक घटना
भऽ सकैत छल
धरि ओ लाइव वीडियो
मानवजन्य कृतघ्नता छल
जतय दुःख दूर करबाक
प्रयास नहि

प्रसारण भऽ रहल छल
दुःखक लाइव

कियो ककरो मारैत रहय
तकर लाइव वीडियो
ककरो एक्सिडेंट भऽ जाइ
तकर लाइव वीडियो
कियो रोड पर कराहैत रहय
तकर लाइव वीडियो
ककरो इज्जति लुटाइत रहय
तकर लाइव विडियो
कियो अपनाकेँ बेचि रहल हो
तकर लाइव वीडियो
कियो दोसरकेँ खरीद रहल हो
तकर लाइव वीडियो
एतय तक जे
जीवन आ मृत्युक
सेहो लाइव वीडियो
बनि रहल अछि

कहू, केहन युगमे
जीबि रहल छी हम
जतय मानवता
दुर्योधन आ दुःशासन जकाँ
द्रौपदीक चीड़हरण पर
जंघा पीटि रहल अछि
आ संवेदना पितामह बनल
सभ किछु मौन भऽ
देखबा आ सुनबाक लेल
वचनबद्ध अछि!

गामक भोज

दू दिन, दू राति
जखन मरल पड़ल रहलाह
असगरे लाल काका
तहन परदेशसँ आयल रहनि
बेटा-बेटी, पुतोहु-जमाय
आ तहन पड़ल रहनि मुखाग्नि
देह भेल रहनि
पंचतत्वमे विलीन
तामे दरे-दियाद
ओगरलकनि मृत देहकेँ
जे कहीं चुट्टी-पिपड़ी
नहि लागि जाइनि

गामक लोक
तामसे-पित्त
कहय— 'भात-पानि बारि देबै फल्लाँमाक
एतेक अन्याय
जे बहु-बेटी लऽकेँ
अपने परदेश बसत
आ माय-बापकेँ
असगरे छोड़ि देत गाममे
मरबाक लेल'
चर्चाक विषय
बनि गेल रहय
ई बात
सम्पूर्ण गाममे

जतेक मुँह ततेक बात

से बात
लाल काकाक सराधसँ पहिने
समाप्त भऽ गेल
जखनहि अयलाह रमेश-सुरेश
आ सरछप्पी कयलाक बाद
बैसार कयलाह समाजक
आ पुछलखिन लोककेँ
सराधक विषयमे
आ भरोस देलखिन लोककेँ
'हमरा जे कही
हम सभमे तैयार छी'
गामक लोक धन-धन
—बेटा हुए तऽ एहन सापूत
बापक सराध लेल
सभ करबा पर
बिर्त्त अछि

आ एहि तरहेँ भेल
लाल काकाक सराध
खीर-पूड़ी, रसगुल्ला-लालमोहन
पात परसँ बहि गेल
लोक खा नहि सकल
चारि दिन तक सड़ल
टोपियामे रसगुल्ला
तहन गेल खत्तामे
जसे-जस भऽ गेलनि
लाल काकाक बेटा सभकेँ

एखनो गामक लोक
लोकसँ पहिने
भोजकेँ रखैए
आ ताहि लेल
किछु कऽ सकैए
ककरो उगा सकैए
ककरो डुबा सकैए!

परित्राणाय साधुनाम्

कियो संवेदनशील मनुख
युद्ध नहि चाहत
युद्ध चाहबाक
चीजे नहि छी
युद्ध तऽ विवशता छी
जे थोपल जाइत अछि
परिस्थितिक हाथेँ
मनुख पर
मनुख निमित्त मात्र
होइत अछि
परिस्थितिक भूमिका
रहैत अछि प्रबल

तहन परिस्थितिये
भऽ जाइत अछि
एहन प्रबल
जे अहाँ चाहियोकेँ
अनदेखा-अनसुना
नहि कऽ सकैत छी
सोझ भाषामे कही तऽ
युद्ध हवा-पानि आ रोटीसँ बेसी
भऽ जाइत अछि
जरूरी चीज
जकरा बिना
अहाँ जीबि नहि सकैत छी

जँ अहाँक मान-सम्मान
हो दाव पर
तऽ युद्ध अहाँ लेल
अनिवार्य भऽ जाइत अछि
जँ अहाँक प्राण हो संकटमे
तऽ युद्ध अहाँ लेल
अनिवार्य भऽ जाइत अछि
युद्ध सख-सेहन्ते
लोक नहि करैत अछि
युद्ध तऽ करय पड़ैत छैक
जीबाक लेल
मान-सम्मानक रक्षाक लेल!

समय-समयक बात छी

एगो समय छल
जे टोलमे
एकटा घरमे रहैत छल लैंडलाइन
आ भरि टोलक लोक
बतियाइत छल ओहि पर
बड़की काकी
छोटकी काकीसँ लऽ कऽ
बाबा, काका, भैया तक
सभ तकैत रहैत छल बाट
जे कखन ककर
फोनक घंटी बजतै
आ लोक बूझत
परदेशियाक समाद
नीक-बेजाय
सभटा घरक बात

अपन तऽ अपन
जे लोकोक फोनक
लोककेँ रहैत छलै इंतजार
फल्लाँक घरवला
फोन केलकै
तऽ चिल्लाँक बेटा
फोन केलकै
बड़की दाइक बेटी
फोन केलकनि
तऽ छोटकी दाइ आइ

अपने अबैत छथि
फल्लाँ गाममे
बियाह छी
तऽ चिल्लाँ गाममे
उपनयन छी
कियो कतहु जँ
अनासुर्तिये चलि गेलाह
तऽ तकरो समाद
आबि जाइत छल
फोने पर
एहि तरहेँ
लोक लोकक सुख-दुःखमे
सहभागी भऽ जाइत छल सहजहि

आब एकहि घरमे
अनेकटा फोन अछि
कही जे आदमी पीछू
एक-एकटा फोन
कोनो-कोनो घरमे तऽ
एक आदमीकेँ
अनेक फोन अछि
धरि तैयो
अपना लोकक
सुख-दुःखसँ
अनजान अछि लोक
नहि बुझैत छैक
कतय की भऽ रहल छैक
ककरा मनमे
की चलि रहल छैक
के हँसैत अछि
के कनैत अछि

संचारक साधन
जँ-जँ लगीच अबैत गेल
लोकसँ लोक
आरो दूर होइत गेल
आब एकहि घरमे
अनेकटा घर अछि
आ एकहि परिवारमे
अलग-अलग सुख-दुःख!

ताड़क गाछ

पिता रोपने रहथि
अपने दलानक बाड़ीमे
ताड़क आँठी
जे कालक्रमे
बेस नम्हर
ताड़क गाछ
बनि गेल
जाहिमे सभ बेर लागय
घोरछाक-घोरछा ताड़
आ गामक लोक
जकरा अछिंजरे कऽ कऽ खाइ

ई ताड़क गाछ
एकटा नहि रहय
एक-दू कऽ कऽ
तीन टा गाछ रहय दलान पर
एक पँतियानीसँ
जँ आन गाम-गमाइतसँ
भार-दौर लऽ कऽ
आबय भरिया
तऽ पहिचानक लेल
ओकरा कहि देल जाइ
जाहि दलान पर
तीन टा ताड़क गाछ
अहाँ ओतहि चलि जायब
तकर मुख्य कारण

ईहो रहय
जे आइ-काल्हि जकाँ
दूरसंचारक सुविधा
नहि रहय ताहि दिनमे

से ओहि घरक
ओहि दलानक पहिचान बनल
ओ ताड़क गाछ
पिताक परोक्ष होइतहि
काटि देल गेल
बड़ निर्ममतासँ
आ हम किछु नहि
कऽ सकलहुँ
आड़ी चलल
ताड़क गाछ पर
आ घाहिल होइत रहलहुँ हम

एकर मुख्य कारण
ईहो रहय
जे पिताक परोक्ष होइतहि
हम स्वयं अस्तित्वविहीन
भऽ गेल रही
ओहि घर
ओहि दलानमे
एहनामे ताड़क गाछक रक्षा
हम कोना करितहुँ
कोन बलेँ करितहुँ

मात्र आँखिसँ बहल
दू बूंद नोर

जकरा अपनहि आँचरसँ
हम पोछि लेलहुँ
जे कियो देखय नहि
पिताक गेलाक बाद
आब ओहि घरमे
नोरो बहबैत
कनी सोचय पड़ैत अछि!

सोंगर

पहिने खढ़क घर रहय
गाममे
लगभग-लगभग सभक
ईटा-पाथरक मकान
तऽ नहियें हिसाबे रहय
आ ई खढ़क घर हुए
बड़ कमजोर
एतेक कमजोर
जे एकोरत्ती भरिगर
आन्ही-बिहाड़ि उठय तऽ
कखनो एम्हर झूकय
तऽ कखनो ओम्हर
सभ बेर
सभ दिन
नवका घर बनायब
सम्भव नहि छल
लोकसँ
तेँ सोंगर लगाय
ठाढ़ कएल जाइत छल
पुरने घर

तेँ संरक्षकक हिसाबेँ
सोंगरक महत्त्व
बड़ पैघ छल पहिने
लोक दू-चारिटा बाँस
दू-चारिटा खुट्टा

रखितहि छल सरियाकऽ हरदम
बेर-बेगरताक लेल
मौसम-चक्र तऽ
बदलितहि रहैत छल
समय-समय पर
कखन कोन दिन
सोंगरक काज पड़ि जायत
से कियो नहि जनैत छल
आब घर तऽ
पक्का मकान अछि
नहि छैक ओकरा
सोंगरक खगता
धरि लोके भऽ गेल कच्चा
भीतरसँ कमजोर
जकरा डेग-डेग पर
सोंगरक खगता
होइत छैक
जामे सोंगर नहि लगतै
ओ ठाढ़े नहि हैत
लटपटा-लटपटाकऽ खसत

तेँ बेर-बेगरता लेल
आपात व्यवस्था लेल
लोक दू-चारिटा
सारिलक खुट्टा
रखैए सोंगर लेल
की पता कखन
काज पड़ि जाइ!

पिंडदान

काका जीवन भरि
दू कें चारि
करितहि रहलाह
चारूकातसँ धन
उघितहि रहलाह
जमीन पर जमीन
कोठा पर कोठा
ठोकितहि रहलाह
बैंक बैलेंस
कतेक छलनि
तकर तऽ गनती नहि
पासबुक एक नहि
अनेक छलनि
चानीकें के पूछय
जे सोना सरियबैत-सरियबैत
काकीक जिनगी बितलनि

से काका आइ मरणोपरांत
एक मुट्ठी भातक
पिंडदान लेल
बाट तकैत हेताह
बीच बाटमे कतहु
बेटा सभ बाबू-बबुआन
देश-विदेश बसैत छनि
काकाक धनक प्रतापें
सभटा छनि महान

के छोट, के पैघ
सभटा एक पर एक
सभ एक-दोसराक
मुँह देखनिहार
ओ पहिने तऽ ओ पहिने
हम एतेक व्यस्त
तऽ हम एतेक व्यस्त
हमरा नहि छुट्टी
तऽ हमरा नहि छुट्टी

काका जँ चाहितथि तऽ
जीबितहि कऽ सकैत छलाह
अपन पिंडदान
दुनियाँमे कतेक
वृद्धाश्रम अछि
कतेक दीन-दुःखी
लोक अछि
कतेक भूखल पेट अछि
कतेक खाली हाथ अछि
ओ जतेक धन
छोड़िकऽ गेलाह पाछू
ओकर एको अंश
जँ एहि सभमे
लगा देने रहितथि
तऽ आइ पिंडदानक लेल
बाट नहि ताकय पड़ितनि
जीबितहि श्राद्ध भऽ जइतनि
भगवान तऽ कहनहि छथि गीतामे–
'दरिद्रते दीयते दानम्
सफलम् पाण्डु नंदनम्।'

शराब आ सवाल

शराब पीबिकऽ
फेर मरलै
उनचालिस गोटे
बिहारमे
भऽ सकैत छैक
अस्सी-नब्बे-सए पर
ई गनती पहुँचि जाइ
कोनो बात नहि
दसटा आगू
कि दसटा पाछू
कोन अंतर पड़ैत छैक
कोनो बाबू-भैया छलै ओ
जे चरमरेतै देशक अर्थ व्यवस्था

ओ तऽ निम्न घर-परिवारक
निम्न कमाइवला
निम्न मजदूर छलै
जकरा भेला आ नहि भेलासँ
राजा आ राज्यकेँ
कोनो अन्तर
नहि पड़ैत छैक
अनियंत्रित जनसंख्या
कोन दिन काज एतैक
एहिना सए-पचास
मरैत रहैत छैक
सरकार की करथिन

जीनाइ छोड़ि देथिन

हुनकासँ जे बनि पड़लनि
करबे केलखिन
बहु आमदनीवला
शराब एहन कारोबार पर
प्रतिबंध लगाकऽ
एहि पर कानून बनाकऽ
आब कारोबार चलिते छैक
तऽ एहिमे सरकारक
कोन दोष
बहुत किछु अवैध अछि
एहि देशमे
ककरो कियो
कहाँ किछु कहैत छैक

एतेक जे कहय लागय लोक
आ एतेक जे सुनय लागय लोक
तऽ जीवन चलतै
जीवनो की
दू-चारिटा छैक
एके टा जीवनमे ने
अनेक रंगक इच्छा-आकांक्षा
पनपै छैक
पलै-बढ़ै छैक
सभकेँ ने पूरा करबाक छैक
कतेक शराब आ सवाल पर
सरकार माथा-पच्ची करताह

बनेनिहार बूझय

पीनिहार बूझय
आ मुइनिहार बूझय
सभक ठेका की
सरकार लऽ कऽ रखने छथिन
देश-काल आ पात्र
अपन-अपन समझसँ
इतिहास लिखत
लिखय दियौ
काल्हि की होयत
से के कहलक अछि!

सवर्ण बनाम सवर्ण

जन्मसँ यदि अहाँ
सवर्ण छी
तऽ बड़ मान-दान होयत
समाजमे
से बात नहि छैक
बात छैक
सामाजिक, आर्थिक हैसियतक
अहाँ कोन जगह पर
ठाढ़ छी
कतेक सीढ़ी ऊपर छी
अहाँक अगल-बगलमे
के सभ छथि
हुनकर सामाजिक-राजनीतिक
दबदबा केहन छनि
अहाँक वर्तमान आ भविष्य
सुरक्षित अछि
वा नहि
भविष्यमे अहाँसँ
कोनो तरहक उपकारक
संभावना छैक
वा नहि
आ सभसँ पैघ बात
अहाँ वर्चस्वशाली छी
वा नहि

से जँ नहि अछि

तऽ जन्मसँ भलेहि
अहाँ सवर्ण होइ
समाजमे अहाँक स्थिति
कोनो दलितसँ बेहतर
नहि होयत
कही जे समाज
व्यक्तिक मूल्यांकन
सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक
दृष्टिएँ करैत अछि
ओ तराजूक
दुनू पलड़ा पर बैसबैत अछि
व्यक्ति आ उपलब्धिकेँ
जे पलड़ा भारी पड़ैत छैक
तकरे माथ राजतिलक
तकरे जय-जयकार!

उकटा-पैंची

पहिने गाममे
बड़की काकी
आ छोटकी काकीक बीच
बड़ झगड़ा होइनि
झगड़ा एहन
जे झोट्टम-झोट्टा तक
कएक बेर भऽ जाइनि
मूठक-मूठ केश
नोचि लेथि
एक-दोसराक
तहियोसँ नहि मोन भरनि
तऽ उकटा-पैंची पर
आबि जाइथि
मार-निमझानी
तऽ मार निमझानी
हम एहन
तऽ हम ओहन
आ ई क्रम
बनले रहय सदैव

आब बड़की काकी
आ छोटकी काकी
सभ्य-सुसंस्कृत भऽ गेलीह
नहि छनि फुरसति
जे झगड़ा-लड़ाइ
उकटा-पैंची करतीह

आब ओ पढ़ल-लिखल छथि
देशक वर्तमान व्यवस्था पर
बहस करैत छथि
टी.वी. देखैत छथि
मोबाइल चलबैत छथि
तहन छुट्टी होइत छनि तऽ
रीलो बनबैत छथि
नामो कमाइत छथि
आब उकटा-पैंची
करैत छथि
पढ़ल-लिखल
बाबा, काका, भैया
हम पैघ तऽ
हम पैघ
हमर ज्ञान एहन
तऽ हमर ज्ञान ओहन
हम सही
तऽ हम सही
हम जे बजलहुँ
से सत्
अहाँ जे बजलहुँ
से झूठ
एना होयबाक चाही
एना नहि होयबाक चाही

देशक वर्तमान व्यवस्थासँ
हुनका नहि लेना-देना छनि
सरोकार छनि
अपन अहंकारसँ
जाहिमे मातल

एना बजैत छथि
की सम्पूर्ण सृष्टि
हुनके मुट्ठीमे होनि
आ ओकरा
वैह संचालित
कऽ रहल होथि!

एकटा अहिंसक व्यक्तिकेँ हिंसक बनाओल जा सकैए

ई जे अहाँ सोचैत होयब
जे हम अहिंसक भऽ
गुजारि लेब
सगर जीवन
आ बिन कोनो पाप कयने
गमन कऽ लेब
एहि संसारसँ इतर
कोनो अन्य लोकक लेल
से सोचलाहा
सभ दिन सभक लेल
संभवे होयत
से संभव नहि अछि

कखनो-कखनो तऽ
घोर अहिंसावादी लोकसँ
एहन तरहक हिंसात्मक कार्य
सम्पन्न कराओल जाइत अछि
जकरा मादे
अहाँ सपनोमे
नहि सोचि सकैत छी
जे ई व्यक्ति
हिंसक भऽ सकैए वास्तवमे
हिंसक होयब
जतबे जन्मजात प्रवृति
ततबे मजबूरियो

कखनो हिंसा
स्वयं होइत बछि
कखनो कराओल जाइत अछि

दुनूक बीच अछि
सत्य असत्यक
जीवन-मरणक
आत्मसंघर्ष
'नरो वा कुंजरो वा'क स्थिति
जतय हाथ पर हाथ दऽ
अहाँ बैसि नहि सकैत छी
कोनो ने कोनो हथियार
अहाँकेँ उठबइए पड़त
ककरो ने ककरो पक्षमे
अहाँकेँ लड़इए पड़त
चाहे तऽ अहाँ
ओकरा मारियौ
नहि तऽ ओ
अहाँकेँ मारि देत!

टीआरपी

टीआरपी लेल
कियो ककरो जान
लऽ सकैत अछि
टीआरपी लेल
कियो अपन जान
दऽ सकैत अछि
टीआरपी लेल
दिनकेँ राति
कहल जा सकैत अछि
टीआरपी लेल
रातिकेँ सेहो
दिन बनाओल जा सकैत अछि
टीआरपी लेल
ओहो सभ संभव अछि
जे-जे असंभव अछि

ई टीआरपीक युग छी
एतय टीआरपी लेल
झूठ-सत्
पाप-पुण्य
किछु नहि देखल जा सकैए
देखल जा सकैए
मात्र टीआरपी
ओहो अपन टीआरपी
जतय रिश्ता-नाता, मानवता
महत्त्व नहि रखैए

महत्त्व रखैए तऽ
मात्र टीआरपी
ई टीआरपी नहि
मानू हस्तिानापुरक
राजसिंहासन हो
जाहि लेल
द्रौपदीक चीरहरणसँ लऽ कऽ
दुःशासन वध तक
सभ सम्भव अछि।

यतो धर्मः ततो जयः

हमेशा जतय धर्म रहैए
ओतय जीत
नहि होइए
कखनो-कखनो जीत
ओतय होइत अछि
जतय अधर्मक
पूर्ण संभावना रहैए
कही जे अधर्मेक
चक्रव्यूह रचल रहैए
ओतय धर्म-अधर्म
महत्त्व नहि रखैए
महत्त्व रखैए जीत
साम, दाम, दण्ड, भेदनीति
कोनो बिधिये
कोनो हथियारे
जीत हासिल
कएल जाइत अछि

तहन नीति तऽ
यैह कहैए–
'यतो धर्मः ततो जयः'
से होइत हैत पूर्वमे
जहिया एहि तरहक
शोध कयल गेल होयत
निःसरनि गंगा जकाँ
ब्रह्मवाक्य

हृदयसँ स्फुरित भेल होयत
आ शोधक
मानि लेने हेताह
''यतो धर्मः ततो जयः''

ओना इतिहास तऽ
धर्मेक बनैत अछि
जकर चर्चा करैए लोक
जकर आदर्श
प्रस्तुत करैए वर्तमान
आ चाहैत अछि
वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे
जीत हमेशा धर्मक हुए
आ अधर्म हारैत रहय
अनीतिक चक्रव्यूह रचना
कयलाक उपरान्तो

आ जँ कहियो कोनो रूपमे
अधर्म जीतक चर्चा
करबो करय कियो
तऽ घृणाक भाव रहय सदैव
जाहिसँ जीतलाक बादो
अधर्म धर्म पर
हावी नहि भऽ सकय
समाजमे अपन जगह
नहि बना सकय
सदैव जीत
कलंक बनल
उपस्थित रहय
अधर्मीक माथ पर।

कामना रहित मोन

गीतामे भगवान कहैत छथि—
'कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषू कदाचन्'
यानी कर्म करैत रहू
फलक चिंता जुनि करू
से वैरागी मोन जँ रहितय
तऽ सभ बुद्ध नहि बनि जइतय
कथी लेल हाँउ-डाँउ
करैत रहितय
चौबिसो घंटा
बैसल रहितय
कतहु एकांतमे
राम-राम जपैत
शीत-रौदमे भीजैत
बिना कोनो प्रतिक्रियाकेँ

धरि ई मोन तऽ अछि सांसारिक
कर्मोसँ पहिने
फलक चिंता करैए
कही जे कर्मो
फलेक आसमे करैए
जँ एकरा पता चलि जाइ
जे फल रहित हैत
ई कर्म
तऽ ओ एक बेर नहि
लाख बेर सोचत
कर्म करबासँ पहिने

कही जे तकर बादो
ओ कर्म करत
ताहिमे
संदेह अछि हमरा

मोन कामना रहित
भऽ जाइ
से बड़ कठिन बात
बड़ कठिन
एकरा बूझब
एकरा बूझायब
ई चौदह योजन
घुमि-फिरि आओत
आ काज करत वैह
जे पूर्व निर्धारित
कयने रहैए
सूर्य पश्चिमसँ उगथु
ताहिसँ एकरा
किछु लेना-देना नहि

ई वैह करत
जे एकरा हितमे छैक
जे एकरा नीक लगैत छैक
कामना रहित
जँ मोन भऽ जाइ
तऽ संसारक
तीन हिस
समस्याक समाधान
तऽ अपनहि भऽ जायत
जे की असंभव अछि!

नामसँ प्रेम

(आचार्य किशोर कुणाल जीक लेल)

ओना तऽ एहि धरती पर
कतेको लोक जनमैत अछि
आ कतेको लोक
मरियो जाइत अछि
धरि लोककेँ
एहि बातक
भानो नहि होइत छैक
जे के जनमल
के मरि गेल
सहसहाइत लोकक बीच
लोक जन्म लैत अछि
आ बिना कोनो नाम-पहिचानक
मरियो जाइत अछि
जकरा एला गेलासँ
ककरो कोनो अन्तर
नहि पड़ैत छैक

धरि किछु लोकक
जन्म लेब
आ किछु लोकक मरब
बहुत अर्थ रखैए
एहि धरती पर
कही जे मैंआक कहबी जकाँ
नीक लोकक जन्म लेलासँ
सवा हाथ धरती

ऊपर उठि जाइत छथि
खुशीसँ
तहिना नीक लोकक मरने
अढ़ाइ हाथ धरती
तर चलि जाइत छथि
दुःखसँ

नीक लोक सभ दिन
नहि ने जन्म लैत अछि
एहि धरती पर
ओ तऽ युग-युगक
पुण्ये-प्रतापेँ
जन्म लैत अछि
आ धरतीक काया पलट कऽ कऽ
चलि जाइत अछि
आ एहिये पुण्यक
फल छलाह
आचार्य किशोर कुणाल
जे जामे जीलाह
जीवनकेँ अर्थपूर्ण रखलाह
अपन कार्यसँ
अपन व्यवहारसँ
धुजाधारी महावीर जीसँ लऽ कऽ
धनुषधारी राम तक
जे एहि बातक साक्षी छथि

जीते-जी सदेह
नहि भेंट भेलाह कहियो
ओना भेंटक कोनो
औचित्यो नहि बनैत छल

कतय ओ खास
कतय हम आम
धरि नामसँ हमरा
प्रेम छल
'आर्चाय किशोर कुणाल'
श्रवण मात्रसँ
लगैत छल
धर्मक ध्वजा
उठबैवला
कियो तऽ अछि
अपन लोक
जकरा अपना कहि
मन गौरवान्वित
अनुभव करैत अछि!

मूल्यांकन

जीबिते जँ मूल्यांकन
भेल रहितनि
बड़का बाबाक
तऽ एहि बातक
दुःख लऽ कऽ
नहि मरितथि
जे जीवनमे किछु
कऽ नहि सकलहुँ
जीते-जी ककरो
भऽ नहि सकलहुँ
कमसँ कम
एहि बातक
संतोष लऽ कऽ तऽ
बिदा होइतथि
एहि धराधामसँ
जे लाखक लाख
लोकक बीच
अनमोल छलाह ओ

से तऽ नहि भेल
जामे जीलाह
उपेक्षिते रहलाह
लोकसँ
समाजसँ
परिवारसँ
राष्ट्रसँ

लोक हुनका देखियोकऽ
अनदेखा करैत रहल
बिसरैत रहल
हुनक योगदान
आ ओ भीतरे भीतर
टुटैत रहलाह
कुहरैत रहलाह
आ अपना लेल
मुक्ति मँगैत रहलाह
जे एतेक कयलहुँ
तऽ ककरा लेल

आब जखन कि
बाबा नहि छथि जीबैत
अचानकसँ आबि गेल अछि
बाबाक मूल्यांकनक बाढ़ि
लोक तराशि रहल अछि
हीरा जकाँ
बाबाक कार्य-व्यवहार
आ छाती पीटि रहल अछि
बाबाक बोहेबाक दुःखसँ
जे अपूरणीय क्षति भऽ गेल
एकर भरपूर
नहि भऽ सकैए

कहू जँ ई बात
बाबा जीबिते
अपना कानसँ सुनितथि
तऽ जीवनसँ मुक्तिये
कियै मँगितथि!

राजाजी

आइ हमर ग्रामीण
राजाजीक देहावसान भऽ गेलनि
ई कोनो नव बात नहि
देहावसान देहक
अन्तिम प्रक्रिया छी
जे सभ देहक
होइत अछि
आ जँ देहक
अंत-अंत धरि
अवसान नहि हो
तऽ देह देखबा जोग
नहि रहत
स्पर्श करबा जोग
नहि रहत
रूप रस, गंध, स्पर्श
किछु नहि बाँचत
ओहि देहमे
तेँ अभ्युदयक संग-संग
अवसानो आवश्यक
एहि देहक

धरि राजाजीक अवसान
नहि पचि रहल अछि हमरा
हमरा सन-सन
अनेक हमर ग्रामीणकेँ
राजाजी नामसँ

राजाजी नहि छलाह
ओ कर्मोसँ
राजे छलाह
साधारण भाषामे कही तऽ
गुदड़ीक लाल

ओ देदीप्यमान चेहरा
दूरेसँ झलकैत
मुँहमे पान
असाधारणो परिस्थितिकेँ
साधारण करबामे माहिर
कीर्त्तन, भजन, गीतनाद, नाटक
कोनो एहन कला नहि छल
जे राजाजीसँ छूटल हो
बालमनमे
जे कलाक प्रति
एकटा आकर्षण होइत अछि
ओ राजाजीकेँ
देखलाक बाद
जागल हो शायद मोनमे
जखन देखने होयब हुनका
मंच पर कोनो विशेष भूमिकामे
अभिनय करैत
कोनो गीतकेँ
लयबद्ध तरीकासँ गबैत
कोनो मन्दिरक प्रांगणमे
भजनमे लीन

ताहि दिनमे
टी.वी.क चलनसारि

नहि छल हमरा गाममे
तेँ भगवानोक आकार-प्रकारक
कोनो छवि
नहि बनैत छल मोनमे
मुदा राजाजीकेँ कृष्ण बनल
जखन देखैत छलहुँ मंच पर
तऽ लगैत छल वास्तवमे
कृष्ण एहने होइत हेताह
आ श्रद्धासँ
झुकि जाइत छल माथ

से राजाजी आइ
मोने कि कुमोने
विदा भऽ गेलाह
एहि धराधामसँ दूर
'आये हैं सो जायेगा राजा, रंक, फकीर'
एहि पाँतीकेँ सार्थक करैत
कनी कालक बाद
देहो अग्निकेँ सौंपि देल जायत
बचि जायत मात्र
राजाजीक गुण
जे कोनो लोककथा जकाँ
मुँहे-मुँह
कहल-सुनल जायत
आ बाँचल रहत शेष
बहुत समय तक।

रोते हैं सब पंख पखेरू, साथ तेरे जो खेले

आदरणीय शरदिन्दू जी
आब अहाँ नहि छी
लोक से कहैए
धरि हमर मोन
नहि मानि रहल अछि
बेर-बेर सुना रहल अछि
कानमे
अहाँक ओ सभ शब्द
जे बात-चीतक दरमियान
अहाँ हमरा कहने रही
जाहिमे किछु सामाजिक
किछु राजनीतिक
किछु व्यक्तिपरक
सेहो रहय

जतेक लगसँ
अहाँ लोककेँ चिन्हैत रही
ओकर अदहो चिन्हब
कहाँ अछि हमरासँ सम्भव
अहाँ तऽ व्यापकसँ व्यापक
लोकक मादे
एतेक निम्नसँ निम्न बात
हमरा कहने छी
की सुनिकऽ हम
छगुन्तामे पड़ि गेल रही
जे एहनो भऽ सकैए

—'नाम बड़े और दर्शन छोटे'
पैर तरहक जमीन
हमरा खिसकैत नजरि आयल रहय
—हे! भगवान केहन-केहन लोक अछि दुनियाँमे
मुदा अछि एहन लोक
जे देखबामे
किछु नजरि अबैत अछि
रहैए किछु आर
कोन रूप असली
कोन रूप नकली
चिन्हब कठिन
अहाँ कहैत रही
भगवान एखन हमरा
नहि बजेताह
हुनका बूझल छनि
एकरा एखन
बहुत काज
करबाक छैक बाँकी
तऽ की अहाँक जीवनक
सभटा काज
आब भऽ गेल पूर्ण
जे भगवान बजा लेलाह अहाँकेँ
या हड़बड़ीमे
हुनकासँ
किछु भूल भऽ गेलनि

हमर तऽ जतय धरि
नजरि जाइत अछि
कनैत-खिजैत देखाइत अछि
अरिजन-परिजन

ओ भरि सौंथ सिनूर
आ भरि बाँहि चूड़ी पहिरने
चौधराइनकेँ स्मरण कऽ कऽ
मोन विह्वल होमय लगैत अछि
अबोध बालक सन राजा जे पिताक बिना
जीनाइ नहि सिखलक अछि एखन
लक्ष्मी-सरस्वती सन बेटी
जकरामे पिताक जान बसैत छलै
विद्यार्थीक अभिभावक
लेखककेँ सुयोग्य प्रकाशक
सभ तऽ तकैए
अहींक मुँह
जँ अहाँ एक बेर फेर
उठिकऽ बैसि जइतहुँ
आरो कतेक रास काज
भऽ जइतै सम्पन्न
जे बाँकी अछि
जयबाक तऽ सभकेँ छैहे
धरि बेदाग विदा होयब
कहाँ छैक सभसँ सम्भव
अपन शर्त पर जीवन जीनाइ
ककरा कहैत छैक
से कियो अहाँसँ सीखथि!

गामसँ घर अयलहुँ

कािल्ह रही अपना गाममे
अपन लोकक बीच
खेत-खरिहानक बीच
गाछी-कलमक बीच
विस्तृत आकाशक बीच
स्वच्छ हवा
निर्मल जलक बीच
आ प्राणवायु दुगुणा-चौगुणा
चारूकातसँ
मोन-प्राणकेँ सम्मोहित
करैत छल
अपन बनबैत छल

आइ गामसँ घर अयलहुँ
महानगरक बीच
भीड़ भरल सड़कवला
प्रदूषित हवावला
प्रदूषित पानिवला
वैमनस्य अहंकारी लोकवला
अजस्र जनसंख्यावला
वैभवक चमक-दमकवला
अन्जान-अनचिन्हार लोकवला
जतय आधुनिक
अनेक सुख-सुविधा तऽ अछि
धरि अपन लोकक
अपनापन नहि!

कुछ पाकर खोना है, कुछ खोकर पाना है

नौ महिना
जखन रखैत अछि माय
अपना संतानकेँ
अपना कोखिमे
तऽ ई नहि सोचैत अछि
जन्म लेलाक बाद
ई संतान हमरा
कतेक सुख देत
केहन रंगक सुख देत
माय यैह सोचैए
ई संतान जे हुए
बेटा या बेटी
बस सुखी रहय

आब सुखक परिभाषा
सेहो अलग-अलग
होइत अछि
ककरो सर्वस्व प्राप्त करबामे
सुख भेटैत छैक
कियो सर्वस्व लुटाकऽ
सुखी होइत अछि
सुखक सम्बन्ध तऽ
मोनक शांतिमे अछि
जाहि तरहेँ
जाहि रूपमे
शांत रहि सकय

सुखी भऽ सकय

धरि जँ माइक दृष्टिएँ
हमरासँ पूछी तऽ
हम एतबे कहब
कोनो माय
संन्यासी संतान नहि
गृहस्थ संतान चाहैत अछि
जे ओकरा सुख-दुखमे
संग दैक
हर परिस्थितिमे
संग चलै
बढ़बै ओकरा वंशवृक्षकेँ आगू
अपन श्रम आ लगनसँ

अध्यात्म मुक्तिक मार्ग
भऽ सकैए
जीवन तऽ
गृहस्थ-धर्मसँ
चलैत छैक।

दो पाहन के बीच में

एकटा मन
संगममे स्नान कऽ
सभ किछु छोड़ि-छाड़ि
वैराग्य धारण करबा लेल
व्यग्र अछि

दोसर मन
सभ किछु
अपना मुट्ठीमे समेटि
सम्पूर्ण गृहस्थीक भार
अपना कान्ह पर लऽ
एहिना वहन करबा लेल
तैयार अछि

ई मनक बीच
जे अन्तर्द्वंद्व अछि ने
ओहि पाहनक बीच
मन पिस्तम-पिस्त भऽ रहल अछि
ककरा पकड़ी
ककरा छोड़ी
एहि दुनूक बीच
दुनू छूटि रहल अछि!

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे

कुरुक्षेत्रमे
धर्मकेँ बाँचब
कठिने नहि
अति दुष्करो अछि

जतय कतहु
कोनो कारणेँ
कुरुक्षेत्रक
वातावरण बनैए
मनुख दू पक्षमे बँटैए
ओतय कोनो ने कोनो पक्ष
अधर्मक सहारा लैए अवश्य

युद्धक अन्तिम लक्ष्य
विजय होइत अछि
आ विजय प्राप्त करबाक लेल
लोक साम-दाम-दण्ड-भेदनीति
एहिमेसँ
एको हथियारकेँ
नहि छोड़ैत अछि
सभ अपनबैत अछि

कुरुक्षेत्रमे
धर्म भऽ जाइत अछि गौण
आ अधर्म हावी रहैए
सभक माथ पर

ओतय के छोट
के पैघ
सभ एक्कहि खेमामे ठाढ़
जकर एक मात्र उद्देश्य
विजय रहैए
धर्मे कि अधर्मे!

मुँहमे अँगुरी दऽ कऽ बजायब

ई जे अहाँ सोचैत होयब
जे हम बाजब
आ अहाँ चुप्प रहब
से नहि हैत
बजैये पड़त अहूँकेँ
जेना बाजी
हँसिकऽ कि कानिकऽ
सुहृदये मोने
कि जबर्दस्ती

नहि बाजब तऽ
मुँहमे अँगुरी
दऽ कऽ बजायब
कहब अहाँ छोट छी
कहब अहाँ मोट छी
कहब अहाँ कारी छी
कहब अहाँ गोर छी
कहब अहाँ अमीर छी
कहब अहाँ गरीब छी
कहब अहाँ ब्राह्मण छी
कहब अहाँ डोम छी
कहब अहाँ स्त्री छी
कहब अहाँ पुरुष छी
कहब अहाँ बिहारी छी
कहब अहाँ पंजाबी छी

कोना नहि बाजब अहाँ
कोनो ने कोनो बात पर
अहाँ प्रसन्न होयब
कोनो ने कोनो बातसँ
अहाँ दुःखी
कोनो ने कोनो प्वांइट तऽ
हैत अवश्य
जतय पिंच करत
हमर बात
आ अहाँ छिलमिलाकऽ
उछलि खसब
कोनो एहन जगह पर
जे सुरक्षित नहि हैत
अहाँक लेल
अहाँ जे चुप्प रहबाक
सप्पत खयने छी
से हम चुप्प रहय देब तखन ने!

फूलसँ चोट

जीवनमे परिस्थिति हरदम
एक रंग नहि रहैत अछि
समय-चक्र बदलैत रहैत अछि
कखनो एम्हर, कखनो ओम्हर
उतार-चढ़ाव लगले रहैत अछि
एकटाकेँ पकड़ू तऽ
दोसर छूटि जाइत अछि
सभकेँ सभ समय
सम्हारनाइयो तऽ
साधारण बात नहि ने

एहनामे कखनो-कखनो
फूलोसँ लोक
आहत होमय लगैत अछि
दर्दक अनुभव करैत अछि
आ ई जे फूलक चोट
होइत अछि ने
ओ काँटोक चोटसँ बेसी
घाहिल करैत अछि
साफ कही तऽ जनमारा
जे ह्दयमे चूभैत रहैत अछि अहर्निश

समस्या अछि जे
काँटक चोट लोक देखैत अछि
बुझैत अछि धरि फूलक चोट
नहि अहाँ ककरो देखा सकैत छी
आ नहि कियो बुझि पबैत अछि!

कुपोषण

एहि विशाल अपार्टमेन्टक
दोसर गार्डक
नाम छी अरविन्द
अरविन्द नाइट ड्यूटी करैए
दिन केँ सुतैए
आठ हजार महिना पर
घर-परिवार चलबैए

पहिने केना चलै छलै
नहि चलै छलै
ताहि बातक पता
नहि चलै छलै लोककेँ
पता चललैए आब
जखन अरविन्द
एक चौकीक जगहमे
तीन टा बच्चा
आ एकटा घरवालीकेँ
आनिकऽ बैसा देलक
अपार्टमेन्टेक किछु लोकक
दया-मायासँ

अरविन्दक तीनू बच्चा
भरि अपार्टमेन्टक निच्चाँमे
दिन भरि
कैंको-कैंको करैत रहैए
एहिमे ककरो

पेट अलगल छैक
तऽ ककरो पोन
ककरो आँखि धँसल छैक
तऽ ककरो गाल
ककरो देह पर
वस्त्र नहि छैक
तऽ ककरो पेटमे अन्न
एहि बच्चा सभकेँ
कियो देखिकऽ
कहि सकैए
जे ई तीनू बच्चा
कुपोषणक शिकार भेल अछि!

कोन घर कानन, कोन घर गीत

राजा जखन
सिंह जकाँ
दहाड़ैत छलखिन
तऽ प्रजा आश्वस्त
होइत छल
हम सुरक्षित हाथमे छी
मजबूत कान्हक
सहारा अछि
जँ परिस्थिति
प्रतिकूलो हैत
तऽ राजा प्रजासँ पहिने
अपन सीना आगू कऽ
रोकि लेताह
विपरीत दिशासँ
अबैवला
कोनो तूफानकेँ

धरि तूफान
आबिकऽ चलि गेल
प्रजा मरल-खपल
असगरे बपहारि काटलक
नहि राजा अयलाह
नहि राजाक
कोनो सुरक्षा-चक्रक
सहारा भेटल प्रजाकेँ
माय कहैत छलीह

एकटा फकरा
—'कोन गोत कोन मात'
ताहि दिनमे
नहि बुझैत छलहुँ
एकर अर्थ
आब बुझि रहल छी
पूरा-पूरी
—'देखू हे आइ माइ नगरक रीत
कोन घर कानन, कोन घर गीत!'

बेटा-बेटा, हाय रे बेटा

राति ललन बाबू
मरि गेलाह
कखन मरलाह
से नहि पता लोककेँ
दू बजैत रहै
या तीन
या पाँचे बजैत होइ
जखन लगमे
कियो रहबे नहि करनि
तऽ की बुझतै लोक
जे कखन मरलाह

हँ, एतेक धरि
पता छैक लोककेँ
राति ललन बाबू
मरि गेलाह
केना मरलाह
हर्ट फेल भऽ गेलनि
या समये पूर भऽ गेल रहनि
या कोनो जड़ियायल
बिमारिये रहनि
सेहो नहि पता छैक लोककेँ

के ककर पता केने घुरैए
चारि आना दुःख
बनले रहैत छैक सभकेँ

ओना पहिनेवला
बातो नहि रहलै आब
जे लोकक लोक
खोज-पुछारि करत
औपचारिकता निम्हेनाइ मात्र
रहि गेल अछि सामाजिकता
सेहो ओहने लोकसँ
जकरासँ भविष्यमे
कोनो तरहक
उपकार होयबाक सम्भावना
रहैत छैक लोककेँ

जखन अपन बेटाकेँ
अपन बापक
कोनो चिंता नहि
तऽ आन के देखितनि
हुनका की परेशानी छलनि
पच्चीस बिगहा खेतक मालिक
ललन बाबू
जीवन भरिमे
एक बीत
नहि बोहेलनि
बिन दरमाहाक नौकर
प्राइवेट कॉलेजमे बनि
जीवन बितेलनि

ओ चाहितथि तऽ
ओहि पच्चीस बिगहा खेतमेसँ
एको-दू बिगहा निपटा
सुखसँ जीवन

बिता सकैत छलाह
मुदा नहि
बेटा-बेटा, हाय रे बेटा करैत
सम्पत्ति सरियेलनि
एक टुक सुपारी
या एक खिल्ली पान तक
तखनहि खेलनि
जखन कियो खुएलकनि

से सम्पत्ति
सरियैले रहलनि
किछु काज नहि अयलनि
‘चल उड़ जा रे पंछी
की अब ये देश हुआ बेगाना’
पंछी पिंजड़ा तोड़िकऽ
उड़ि गेल
ठठरी पड़ल अछि
अँगनामे
बेटा सभ अओतनि तऽ
मुखाग्नि देतनि
जीबैत देखभाल
नहि केलकनि
तऽ मरलोपरांत
उतरी पहिरतनि!

बारह बजे रातिक कवि सम्मेलनमे

जखन कखनो
परिस्थितिवश
बारह बजे राति धरि
चलैए कवि सम्मेलन
आ ओहि सम्मेलनमे
अहाँ होइ सहभागी
कविक संख्या
बीस-बाइस, पच्चीस-तीस हो
जँ नहि पच्चीस-तीस
तऽ पन्द्रह तऽ मानिकऽ चलू
रहबे टा करताह
एहिसँ कममे
मंचक शोभा
नहि बढ़ैत छैक
कही जे झुझुआन लगैत छैक

से ताहि कवि सम्मेलनमे
कवि माइक पकड़ितहि
अपना धुनिमे
कविता पर कविता
प्रस्तुत करबामे व्यस्त हो
बिना घड़ी दिस देखने
बिना आगू-पाछू सोचने
की मंचस्थ कविक
मानसिक स्थिति
की छनि

श्रोता सुनियो रहल छथि
वा नहि
तऽ बुझू
ओ कवि सम्मेलन
ओहिमे अपन सहभागिता
अपच लागय लगैत छैक
होइत छैक
कखन फारकति हैत
एतयसँ
जे खुलिकऽ
कनी साँस लेब
देह-हाथ मोड़ब
सोचब कल्हुका विषयमे

बारह बजे रातिक कवि सम्मेलनमे
लोक कविता
नहि सुनैए
लोक जबर्दस्तीक
काँड़ी पीबैए
जतय नहि मोन संग दैत छैक
नहि तन
कही जे स्वैच्छिक कारागारमे
लोक बंद भऽ जाइत अछि
जतय नहि रहल जाइत छैक
जतयसँ नहि पड़ायल होइत छैक!

आउ, विवाद नहि संवाद करी हम

मैथिली हमर भाषा छी
मैथिली अहाँक भाषा छी
मैथिली हमरा सभक भाषा छी

मैथिलीसँ हम प्रेम करैत छी
मैथिलीसँ अहाँ प्रेम करैत छी
मैथिलीसँ हमसभ प्रेम करैत छी

मैथिली हमर पहिचान छी
मैथिली अहाँक पहिचान छी
मैथिली हमरा सभक पहिचान छी

मैथिलीक संरक्षण संवर्धन लेल
हम जान लगा देब
मैथिलीक संरक्षण-संवर्धन लेल
अहाँ जान लगा देब
मैथिलीक संरक्षण-संवर्धन लेल
हमसभ जान लगा देब

मैथिली हमरा धमनीमे
रक्त बनि बहैत अछि
मैथिली अहाँक धमनीमे
रक्त बनि बहैत अछि
मैथिली हमरा सभक धमनीमे
रक्त बनि बहैत अछि

तहन विवाद नहि
आउ, संवाद करी हम
किछु अपन कही
किछु अहाँक सुनी हम
मान-सम्मानक पाग
एक-दोसराक माथ धरी हम
जय मिथिला
जय मैथिली
कही हम।

अपन-अपन धर्म

आइ भोरे कहलियै
अपन बच्चाकेँ
'रौ बाबू! आइसँ
नवरात्रि शुरू भऽ गेल अछि
पहिने नहा-धो
पूजा-पाठ कर
तहन किछु आरो करिहें'

ओ कहय लागल
—'मम्मी हम तऽ पूजा करितहि छी
देखै नहि छी अहाँ'
हम कहलियै
'रौ बाबू! कहाँ किछु देखाइए हमरा
तूँ तऽ किताब लऽ कऽ
बैसल छें'
ओ चट दऽ उत्तर दैए
—'इहे तऽ हमर पूजा छी
हम विद्यार्थी छी
पढ़नाइये हमर पूजा भेल'
हम सोचबा पर
विवश भऽ गेलहुँ

हम सोचितहि रही
कि तखनहि बाहरसँ
फेरीबलाक आवाज आयल
'नहि हाथी, नहि घोड़ा भैया

सौ रुपैए जोड़ा''
ओ सए रुपैयामे
दूटा गमछा
बेचैत छल
हमर मोन सजग भऽ गेल
एक दिस जतय
बहुतो लोक
पूजा-पाठ करैए
देवीकेँ मनबैए
ओतहि दोसर दिस लोक
अपन-अपन काजमे
लागल अछि

हमरा लागल
बच्चा जे कहैए
से ठीके कहैए
अपन-अपन कर्म
आ अपन-अपन धर्म छैक सभक
जे जाहि कर्मसँ
बान्हल अछि
ओहियेमे ओकर
धर्मो सन्निहित छैक
जँ कर्म नहि भेल समय पर
तऽ धर्म अपने आप
नष्ट भऽ जायत
जँ कर्म भेल समय पर
तऽ धर्मक वृद्धि
तय अछि।

अनुबंध

जीवन भरि बाबा
'हरि नाम संकीर्त्तन'मे
संलिप्त रहला
जंगले-झाड़े
खेते-पथारे
गलिये-कुचिये
घरे-घर
मन्दिरे-मठे

भक्तक संख्या
अनगिनत बढ़ैत गेलनि
दिन-पर-दिन
किछु स्वेच्छासँ
किछु बंसीमे बझा-बझा
जे एक बेर आयल
एहि रामनामी चादरि तर
से फेर नहि घुरल घर

एके धुनि
एके जाप
हरि ॐ तत्सत्
एहि सभक बीच
हरि कखन
कतय रहला
ककरो नहि अछि बुझल
धरि बाबा

आ हरिक बीच
जे भेल छल अनुबंध
ओ रहल जीवन पर्यन्त

आइ जखन कि
बाबा नहि छथि
भऽ गेलथि
पंचतत्वमे विलीन
काका कऽ रहल छथि
वृषोत्सर्ग सराध
बाबाक मुक्तिक लेल
दागल जायत साँढ़
आगिमे तपाओल जा रहल अछि दगनी
एहि योग-क्षेमसँ
अनभिज्ञ वृष
आँखि मुनने बैसल
कऽ रहल अछि 'पाउज'
आ सकल समाज
तमाशा देखबाक लेल
भेल अछि उपस्थित

बाबाबक आत्मा
जल-थल-नभ
जतय कतहु हो
काकाकेँ विश्वास छनि
ओतहिसँ भऽ जेताह मुक्त
करैत हरि नाम संकीर्त्तन
हरि ॐ तत्सत्
हरि ॐ तत्सत्!

जन्मजात सम्बन्ध

सभ धनतेरस पर
सभ साल
मात्र माटिक दीप
कीनैत छी हम
नहि ओतेक सामर्थ्य अछि
नहि तेहन बेगरता
जे सोना-चानी कीनब
ओना सामान्य लोकक बेगरता
सामर्थ्य पर निर्भर करैत अछि
आ हमरा सभ एहन
सामान्य लोककेँ
पेट भरि अन्न
देह भरि वस्त्र
माथ भरि छाहरि
भेटि जाइ
तऽ एहिसँ पैघ बात
आर की होइत अछि

ओहो जे बियाह-द्विरागमनमे देलहा
सासुर-नैहराक चढ़ौआ
एक आध ग्राम सोना-चानी अछि
ओहो पेटीये-बाकस पहिरैत अछि
आ गरदनिमे झूलैत रहैत अछि
सिटी गोल्डक चेन-मंगलसूत्र
माय कहैत छल एकटा फकरा—
'सोना पहिरय पेटी

आ टलहा परिहय बेटी’
एकर अलावा
दोसर उपाइये की अछि
जँ जीबाक अछि
आ लोकक बीच रहबाक अछि
तऽ एहि सभ मायाक
परित्याग करय परत
गाहे-बगाहे खबरि
अबितहि रहैत अछि
फल्लाँक चेन खींचलक
तऽ चिल्लाँक मंगलसूत्र
खींचनाहरोक की दोष दीयै
ई जे पेटक आगि होइत अछि ने
ओ सभ नैतिकता पर
भारी पड़ैत अछि

ओना माटिक दीप
किनलाक बादो
हमर प्रसन्नता
ओतबहि रहैत अछि
जतेक रहैत अछि
लोककेँ
सोनाक चन्द्रहार
किनलाक बाद
हम किसानक बेटी छी
माटिसँ हमर सम्बन्ध
जन्मजात अछि।

गाम-1

बहुत मोन पड़ैत अछि
हमरा अपन गाम
संगहि मोन पड़ैत अछि
कार्तिकक शीतायल भोर
गायक गोबरसँ
नीपल अँगना
लजाइत-धखाइत
नवकी कनियाँ सन
नहुँ-नहुँ उतरैत
पनबट्टा सन सूर्य

बहुत मोन पड़ैत अछि
हमरा अपन गाम
संगहि मोन पड़ैत अछि
अपना गाछक चम्पा-चमेली-अड़हुल
ओहिसँ पुजित
कुलदेवी काली
ओहिसँ सजल
छठि परमेश्वरीक डाली
पानक पात, सुपारी, नारियल संग
भुसबा-ठेकुआ, आरतक पात आ बद्धी
लाल-पीयर साड़ी पहिरने
बड़की काकी
छोटकी काकी

बहुत मोन पड़ैत अछि

हमरा अपन गाम
संगहि मोन पड़ैत अछि
नवका छाँछीक
ओ दही ओ पूड़ी
जे पोखरिक घाट परसँ
छठि परमेश्वरीकेँ
भोग लगाकऽ अनैत छलहुँ
आ भोरे-भोर
खाइ लेल बैसि जाइत छलहुँ

नारियलक पानि
कुसियारक रस
सिंगापुरी केरा
नवका छाँछी आ मटकूड़ी
तऽ एखनो भेटैत अछि ओतय
जतय हम छी
धरि अपन गाम
आ अपन लोक
नहि अछि
अपन पाबनि-तिहार
आ अपन समाज
नहि अछि!

गाम-2

बड़ मोन पड़ैए
मरुआक रोटी
इचना माछक चटनी
गेन्हारी साग
हरियरका लौंगिया मिरचाइ

बड़ मोन पड़ैए
भुल्ली महींसक
पीठार सन दूध
ओकर सजबी दही
छाँछी भरि घोर-मट्ठा संग
टटका बरकायल 'घी'
ओकर सोन्हर डाढ़ी

बड़ मोन पड़ैए
अपना गाछक आम
डम्हायल लताम
कागजी नेबो
मालभोग केरा
अपना बारीक भट्टा-मुरै संग
आलू-कोबी

बड़ मोन पड़ैए
सतरिया धानक चूड़ा
राम दुलारीक चाउर
आर-ए-आठक भात संग

ओल-अरिकंचक तीमन
पटुआक साग संग
अल्लुक चोखा

लाल काकीक ‘पराती’
छोटकी काकीक ‘साँझ’
बड़की काकीक ‘सोहर’
नवकी भौजीक ‘चैतावर’
बड़ मोन पड़ैए
सती मोहार परहक
ब्रह्म बाबा
नवी पोखरीक ‘महादेव’
दक्षिणबरिया टोलक ‘राम-जानकी’
पछबरिया टोलक ‘काली जी’

बड़ मोन पड़ैए
अपन घर-परिवार
अपन सर-समाज
अपन हीत-मीत
अपन लोक
अपन गाम!

मेरे राम

मोन बेर-बेर
जाकऽ ठाढ़ भऽ जाइए
अयोध्याक ओहि नव निर्मित
मन्दिरमे
जतय नव कलेवरमे
बालक राम
स्थापित भेलाह अछि

जखन पहिल बेर
पहुँचलहुँ हुनका लग
तऽ देखलहुँ से
देखितहि रहि गेलहुँ
—'दिवि सूर्य सहस्त्रोसि'
गीताक ई पाँती
पहिने पढ़ैत रही
तखन साक्षात्
आँखिसँ देखि रहल छलहुँ
अद्‌भुत, अलौकिक
किछु तऽ बहुत विशेष
अछि ओहि मूर्तिमे
जे बरबस आकृष्ट
करैत अछि
अपना दिस लोककेँ

आकर्षण एहन
जे दू मिनट

चारि मिनट
देखलासँ की हैत संतोष
जँ जनम भरि लोक
निहारैत रहत रूप
तैयो मोन भरतै कि नहि
से कहब कठिन
ओना राम
मात्र मन्दिरमे नहि
जन-जनमे
विराजमान छथि
अयोध्याक गली-गलीमे तऽ सहजहि
जे भारतक हर एक कोनमे
हर एक व्यक्तिक मोनमे सेहो
'तुम्हीं हो बंधु, सखा तुम्हीं हो'क
रूपमे सेहो
जतय प्रत्येक व्यक्ति
आत्मविश्वाससँ कहैत अछि
—मेरे राम!

खंडहर

बात पाँच सए हजार सालक नहि छी
जे कहब अतीत
एहिना ढहैत-ढनमनाइत अछि
एहिना फाटल पन्नामे
दबाइत-मेटाइत अछि

बात हाले-फिलहालक छी
जखन एतय
एकटा भरल-पूरल
राजमहल भेल करैत छल
नौकर-चाकर
दास-दासी
राजा-रानीसँ परिपूर्ण

राजाक एक आज्ञा पर
हाजिर होइत छल
सम्पूर्ण प्रजा
रानीक बात
मानल जाइत छल
ब्रह्मवाक्य
राजकुमार-राजकुमारी
सोनाक पलना झूलैत छल
सोनाक कटोरीमे
दूध-भात खाइत छल
राजाक पूत
रानीक पुत्रीक मनोरंजन लेल

तोड़ल जाइत छल चान
उतारल जाइत छल तरेगन

से हवाक रुखि
एना बदलल
समय एना परिवर्तित भेल
जे हाथी हथिसारे खसल
घोड़ा घोड़सारे
राजा-रानी
राजकुमार-राजकुमारीक
कोनो अता-पता नहि
आ राजमहल खंडहरमे बदलि गेल!

सभ सम्बन्धक बीचमे अछि मोबाइल

जखन पहिल बेर
गेल रही मुम्बइ
तऽ संचारक
एकमात्र साधन रहय पत्राचार
एकर अलावा किछु नहि
लोककेँ
महिना दिन लागि जाइ
एक-दोसराक
कुशल-समाचार बुझबामे
तामे के मरल
के जीबैत अछि
तकर कोनो जानकारी नहि
एक-दोसराकेँ

मुम्बइ गेलाक बाद
जखन देखलहुँ
किछु-किछु लोकक
हाथमे मोबाइल
तऽ हुअ लागल
जरूर ई सभ
बड़ धनीक अछि
कारण, ओहि समयमे
मोबाइलक चलनसारि
बहुत कम रहय
आ जे रहबो करय
से बहुत महग

आम लोकक
हाथसँ दूर

फेर गाममे
लैंडलाइन लागय लागल
लोकक दूरी
धीरे-धीरे कम भेल
मुदा आसान नहि
इनल-गिनल घरमे छल
ईहो सुविधा
धरि राहतक गप्प
एतबहि छल
जे लोक एक-दोसराक
फोन नम्बरकेँ
अपन फोन नम्बर जकाँ
उपयोग करैत छल
एहि तरहेँ
एक-दोसराक सुख-दुखक
सहभागी होइत छल

विकासक डेग
बढ़ल एक सीढ़ी
आरो आगू
आ भारत सरकार
संचार क्रांतिक रूपमे
मोबाइलकेँ
पहुँचा देलक
आम लोकक हाथ
धरि यात्रा
एखनो बहुत आसान नहि छल

कॉल दर
एतेक महग छल
जे दूटा बात नहि भेल
कि सए-पचास रुपैया
देखितहि-देखितहि
निपत्ता भऽ जाइत छल
आ सए-पचास रुपैयाक
कीमत छल
ताहि दिनमे

आब की आम, की खास
सभक हाथमे
अछि मोबाइल
कोनो-कोनो हाथमे
तऽ एतेक मोबाइल अछि
जे हाथ दोसर काजक लेल
खालिये नहि अछि
आ अनलिमिटेड कॉलमे
लोक बाझल रहैए
कतराक झाड़ सन
घंटाक घंटा
समय बीति रहल अछि
पानि पर दहाइत तेल सन एहिना
एतबो रहितय तऽ चलितय
धरि जे मोबाइल
लोककेँ लोकसँ जोड़लक
से आइ सभ सम्बन्धक बीचमे अछि ठाढ़
देबाल बनल
लोक लग रहितहु
बहुत दूर भऽ गेल।

हेहर

सम्पूर्ण साधना पर
ध्यान-पूजा पर
आचार-विचार पर
भारी पड़ि रहल अछि
एकटा माछी

हाथमे अछि
रूद्राक्षक माला
नहि किछु तऽ एको माला
लेबनि भगवानक नाम
दिन भरि तऽ
रागे-अनुरागमे
लटपटायल रहैत छी
वैराग्यक लेल
कहाँ भेटैत अछि फुरसति
मरय लागब
तखनहुँ धरि
लगैए यैह क्रम रहत जारी
गीताक अठारहो अध्याय
पढ़ि गेलहुँ
सार एखनहुँ तक
बूझब अछि शेष

भगवान किछु खाइत नहि छथि
(नीके छनि जे नहि खाइत छथि
जँ खाइ लगितथि

तऽ देबा काल लोक
सोचि-समझिकऽ दीतनि)
मुदा भावनाक भरण-पोषण लेल
किछु ने किछु
यथासम्भव
राखि दैत छियनि आगू
—‘त्वदीयं वस्तु गोविन्द
तुभ्यम् मेव समर्पयेत्’
हे! गोविन्द हम ताहि जोग नहि छी
जे अहाँकेँ
किछु अर्पित कऽ सकी
तथापि...

से स्नेहपूर्वक देल गेल
गोविन्दक भोग
ई हेहर माछी
बेर-बेर मना कयलाक बादो
गोविन्दसँ पहिने
खा लेबा पर उतारू अछि
जो रे अभगला
तोरो पेट
केहन भारी भेलहु
नहि बेर देखैत छें
नहि कुबेर
जेम्हरे देखैत छें तेम्हरे
मुँह मारय लगैत छें

मोन तऽ घोर-घोर भेल अछि
की पूजा करब
की पाठ करब

ध्यान एहि माछी परसँ
हटिते नहि अछि
होइए एक चटकी दियै
आ एकरा कऽ दी
एहि पूजा परिसरसँ बाहर
धरि पकड़ाइते नहि अछि
ओना अहिंसावादी लोक छी हम
तेँ एकरा मारियो नहि सकैत छी!

श्मशान वैराग्य

जखन वसंत अबैत अछि
हरियर डारि पर
फूल फुलाइत अछि
मह-मह करैत अछि वातावरण
पाँच-दस भमरा
फूले-फूले डोलैत अछि
सभक कानमे कहैत अछि
अहाँ सुन्दर
तऽ अहाँ सुन्दर
अहाँमे बेसी पराग
तऽ अहाँमे बेसी पराग
अहाँ हमर प्रिये
तऽ अहाँ हमर प्रिये

तखन जँ फूल
वैराग्य ग्रहण करय
माया-मोहसँ पार पाबय
पराग आ सुन्दरताक आकर्षणसँ
भमराकेँ कात करय
तऽ हम कहि सकैत छी
वास्तवमे फूलमे
वैराग्यक भाव
आबि गेल अछि
फूल जीवनक नश्वरतासँ
अवगत भेल अछि

मुदा से जँ नहि

तऽ जीवनक चारिम अवस्थामे
जखन रूप-गुण आ यौवन
मुरझाकऽ जमीन पर खसैएबला हो
जीवन एकाकी आ एकांतवासी हो
जतय एकटा कार पंछी
नहि हो पूछयबला
ओतय फूल कहय
हम वैराग्य ग्रहण करैत छी
माया-मोहक परित्याग करैत छी
तऽ एकरा हम स्वाभाविक वैराग्य
नहियें कहब
ई श्मशान वैराग्य छी
जे ढलैत समयक संग
आबि जाइत अछि
जीवमे सहजहि।